

છહઢાલા - ઢાલ 4

પ્રકાશ છાબડા, યંગ જૈન સ્ટડી ગ્રુપ, ઇન્દૌર

 99260-40137



चौथी ढाल में किसका वर्णन हैं

- सम्यक्ज्ञान
- देशचारित्र

सम्यक्ज्ञान

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

छंद 1

सम्यक् श्रद्धा धारि पुनि, सेवहु सम्यक् ज्ञान ।
स्वपर अर्थ बहु धर्मजुत, जो प्रकटावन भान॥

सम्यक्ज्ञान का लक्षण

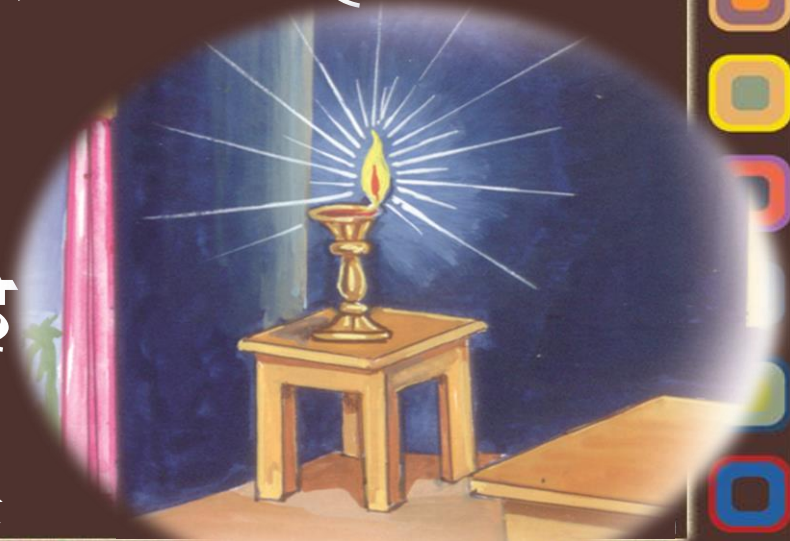
□ सम्यग्दर्शन धारण करके सम्यक्ज्ञान का
सेवन करो

□ अनेक धर्मात्मक अपना और दूसरे का
ज्ञान कराने में सूर्य के समान है ।

छंद 2

सम्यक् साथे ज्ञान होय, पै भिन्न अराधौ ।
लक्षण श्रद्धा जानि दुहू में भेद अबाधौ ॥
सम्यक् कारण जान, ज्ञान कारज है सोई ।
युगपत् होते हूँ प्रकाश दीपक तैं होई ॥२॥

- सम्यग्दर्शन के साथ सम्यक्ज्ञान होता है तथापि दोनों को भिन्न समझना चाहिये
- उन दोनों के लक्षण श्रद्धा करना और जानना है
- तथा सम्यग्दर्शन कारण है और सम्यक्ज्ञान कार्य है, यह भी दोनों में अंतर निर्बाध है
- एक साथ होने पर भी उजाला दीपक की ज्योति से कहा जाता है उसी प्रकार ।



सम्यग्दर्शन और सम्यक्ज्ञान में अंतर

सम्यग्दर्शन

सम्यक्ज्ञान

एक साथ होने पर भी अंतर

लक्षण - श्रद्धा

लक्षण - जानना

कारण

कार्य

उदाहरण - दीपक

प्रकाश

पर द्रव्यों से भिन्न आत्मा की रुचि

पर द्रव्यों से भिन्न आत्मा को जानना

सात तत्त्वों का यथार्थ श्रद्धान

सात तत्त्वों को यथार्थ जानना

छंद 3

तासु भेद दो हैं परोक्ष, परतछि तिन माहीं
मति श्रुत दोय परोक्ष, अक्ष मन तैं उपजाहीं ॥
अवधि ज्ञान मनपर्यज दो हैं देश-प्रतच्छा ।
द्रव्य क्षेत्र परिमाण लिए, जाने जिय स्वच्छा ॥३॥

सम्यक्ज्ञान के भेद

- उस सम्यक्ज्ञान के परोक्ष और प्रत्यक्ष दो भेद है
- उनमें मतिज्ञान और श्रुतज्ञान परोक्षज्ञान हैं, इन्द्रियों तथा मन के निमित्त से उत्पन्न होते हैं
- अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान - ये दोनों ज्ञान देशप्रत्यक्ष है, जीव द्रव्य और क्षेत्र की मर्यादा लेकर स्पष्ट जानता है ।

मतिज्ञान



इन्द्रिय और मन की सहायता
के द्वारा पदार्थों को जानना

श्रुतज्ञान



मतिज्ञान से जाने हुए पदार्थ का
अवलम्बन कर अन्य पदार्थ का ज्ञान

अवधिज्ञान



द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की मर्यादा
लिये रूपी पदार्थों को स्पष्ट जानना

मनःपर्ययज्ञान



जो दूसरों के मन में स्थित रूपी
पदार्थों को स्पष्ट जाने

छंद 4

सकल द्रव्य के गुण, अनन्त परजाय अनंता ।
जानैं एकै काल, प्रकट केवलि भगवन्ता ॥
ज्ञान समान न आन, जगत में सुख कौ कारण ।
इहि परमामृत जन्मजरामृति रोग निवारन ॥४॥



□ केवलज्ञानी भगवान् छहों द्रव्यों के
अपरिमित गुणों और अनंत पर्यायों को एक
साथ स्पष्ट जानते हैं

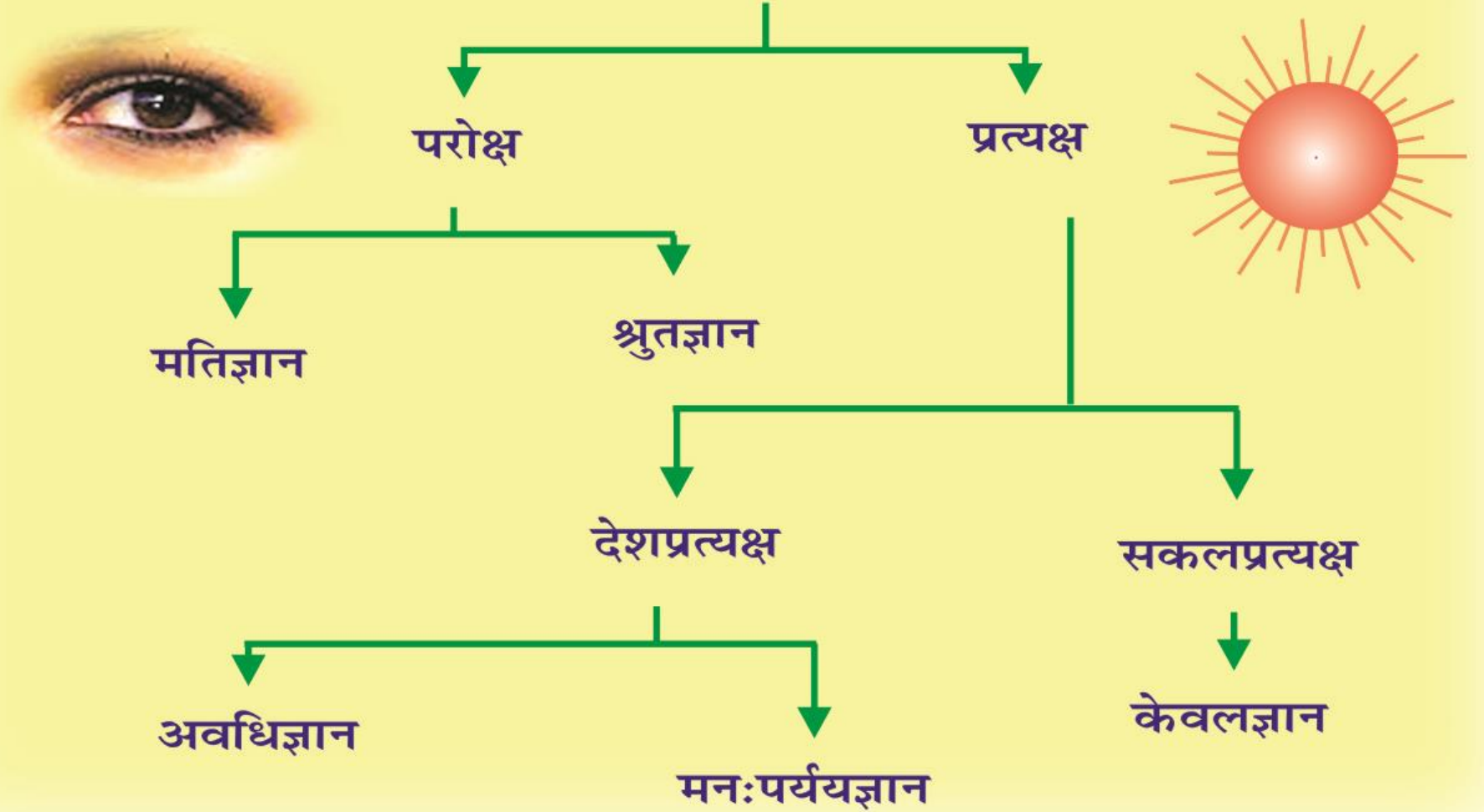
प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

केवलज्ञान



सभी द्रव्यों की सभी पर्यायों
को युगपत् जानता है

सम्यग्ज्ञान के भेद-प्रभेद



ज्ञान सम्बन्धी प्रयोजनभूत विचार

मति-श्रुत ज्ञान

1. हमारा वर्तमान प्रकट
ज्ञान

2. पराधीन

3. क्रमिक - इन्द्रियों के
द्वारा पदार्थों को क्रम से
जानता है

केवलज्ञान

1. हमारा स्वभाव

2. स्वाधीन

3. युगपत् - सम्पूर्ण
पदार्थों को इन्द्रिय बिना
एक साथ जानता है

ज्ञान सम्बन्धी प्रयोजनभूत विचार

मति-श्रुत ज्ञान

केवलज्ञान

४. क्षणिक -
क्षायोपशमिक होने से
क्षणिक है

४. शाश्वत - क्षायिक
होने से शाश्वत रहता है

५. घटता-बढ़ता है

५. एक जैसा रहता है

६. इन्द्रियज ज्ञान है

६. अतीन्द्रियज ज्ञान है



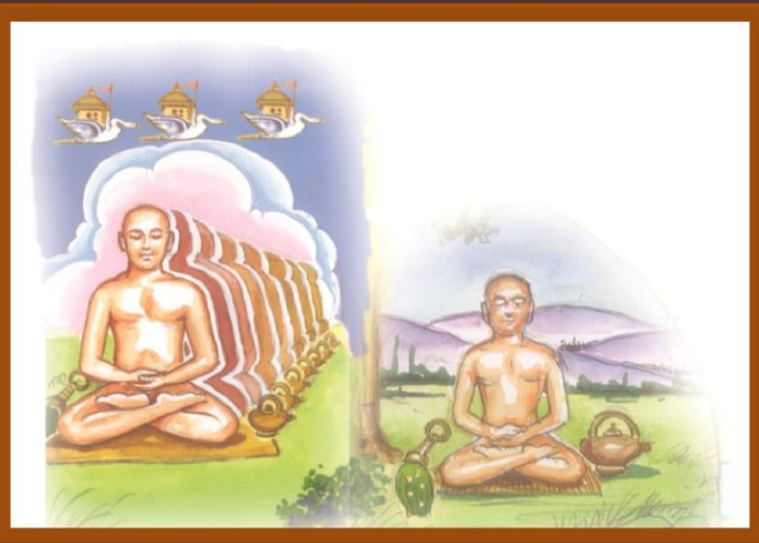
□ इस जगत में सम्यक्ज्ञान जैसा दूसरा कोई पदार्थ सुख का कारण नहीं है

□ ये सम्यक्ज्ञान ही जन्म, जरा, मृत्युरूपी रोगों को दूर करने के लिए उत्कृष्ट औषधी के समान है

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

छंद 5

कोटि जन्म तप तपैं, ज्ञान विन कर्म झरैं ते ।
ज्ञानी के छिन में, त्रिगुप्ति तैं सहज टरैं ते ॥
मुनिव्रत धार अनंतबार ग्रीवक उपजायो ।
पै निज आतमज्ञान, बिना सुख लेश न पायौ ॥५॥



ज्ञानी और अज्ञानी के कर्म
नाश के विषय में अंतर

- सम्यक्ज्ञान के बिना करोड़ों जन्मों तक तप करने से जितने कर्म नाश होते हैं
- उतने कर्म सम्यक्ज्ञानी जीव के मन, वचन और काय की प्रवृत्ति के रूकने से क्षण में सरलता से नष्ट हो जाते हैं

- मुनियों के महाव्रत को धारण करके अनंत बार नववें ग्रैवेयक तक उत्पन्न हुआ
- परंतु अपने आत्मा के ज्ञान बिना किंचित मात्र सुख न प्राप्त कर सका

अज्ञानी

करोड़ो वर्ष में बाल तप से
कर्मों की निर्जरा करता है

पुनः नवीन बंध हो जाता है

अज्ञान के साथ अनंत बार
मुनिव्रत धारण कर ग्रैवेयक
तक उत्पन्न होने पर भी
किंचित सुख नहीं पाते हैं

ज्ञानी

वही निर्जरा क्षण मात्र में
त्रिगुप्ति से करते हैं

नवीन बंध नहीं होता

ज्ञानी निरंतर सिद्ध जैसे
सुख (निराकुलता) का
भोग करते हैं

द्रव्यलिंगी मुनिराज

भावलिंगी मुनिराज

28 मूलगुणों का
निरतिचार पालन करते हैं

3 कषाय का अभाव
होता है

बिना भावलिंग के भी हो
सकता है

बिना द्रव्यलिंग के नहीं
होता है

ग्रैवेयक तक उत्पन्न हो
सकते हैं

सबसे ऊपर की स्वर्ग
सर्वार्थसिद्धी तक उत्पन्न हो
सकते हैं । मोक्ष भी जाते हैं

छंद 6

तातैं जिनवर कथित, तत्त्व अभ्यास करीजे ।
संशय विम्रम मोह, त्याग आपो लखि लीजे ॥
यह मानुष पर्याय सुकुल सुनिवौ जिनवाणी ।
इह विधि गए न मिले, सुमणि ज्यौं उदधि समानी ॥6॥

□ इसलिए जिनेन्द्र देव के द्वारा कहे हुए तत्त्व का
अभ्यास करना चाहिए

□ और संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय को
छोडकर, अपनी आत्मा को जानना चाहिए

ज्ञान के दोष

संशय

शंका होना

विपर्यय

विपरीत जानना

अनध्यवयसाय

कुछ निर्णय न होना

मनुष्य पर्याय की पुनः प्राप्ति कैसी दुर्लभ हैं ?



- यह मनुष्य भव, उत्तम कुल, जिनवाणी का सुनना ऐसा सुयोग बीत जाने पर पुनः मिलना
- समुद्र में गिरी मणि के मिलने के समान है

छंद 7

धन समाज गज बाज, राज तो काज न आवै ।
ज्ञान आपको रूप भये, फिर अचल रहावै ॥
तास ज्ञान को कारन, स्व-पर विवेक बखानौ ।
कोटि उपाय बनाय भव्य, ताको उर आनौ ॥७॥



□ पैसा, परिवार,
हाथी, घोडा, राज्य
तो अपने काम में
नहीं आते

□ किंतु सम्यक्ज्ञान
आत्मा का स्वरूप
प्राप्त होने के
पश्चात् अचल
रहता है

सम्यक्ज्ञान की प्राप्ति का कारण क्या हैं ?



- आत्मा और पर-वस्तुओं का भेद विज्ञान कहा है
- इसलिए, हे भव्य करोडो उपाय करके उस भेद विज्ञान को हृदय में धारण करो ।

छंद 8

जे पूरब शिव गए जाहिं, अरु आगे जैहैं ।
सो सब महिमा ज्ञान-तनी, मुनिनाथ कहै हैं ॥
विषय चाह दव दाह, जगत जन अरनि दझावै।
तास उपाय न आन, ज्ञान घनघान बुझावै ॥४॥

सम्यक्ज्ञान की महिमा

□ पूर्व काल में जो जीव मोक्ष में गये हैं, जा रहे हैं और भविष्य में जायेंगे वह सब सम्यक्ज्ञान की महिमा है – ऐसा जिनेन्द्र देव ने कहा है

विषेच्छा रोकने का उपाय

- जैसे-

- विषय चाह रुपी

- जगत रुपी

- जीवों को

- ज्ञान

- वैसे-

- अग्नि को बुझाने के लिये

- वन में

- प्राणीयों को

- घने मेघ के समान हैं

छंद 9

पुण्य पाप फल मांहि हरख, विलखौ मत भाई।
यह पुद्गल परजाय उपजि, विनसै फिर थाई।।
लख बात की बात यही, निश्चय उर लाओ ।
तोरि सकल जग दंद फंद, नित आतम ध्याओ ॥9॥

पुण्य-पाप में हर्ष-विषाद का निषेध

- हे भाई ! पुण्य-पाप के फल में हर्ष-द्वेष न कर
- ये पुद्गल की पर्यायें हैं, उत्पन्न होकर नष्ट हो जाती हैं और पुनः उत्पन्न होती हैं
- अपने अंतर में वास्तव में लाखों बातों का सार इसी प्रकार ग्रहण करो
- जगत के समस्त द्वन्द को छोड़कर अपनी आत्मा का ध्यान करो ।

देशचारित्र

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

छंद 10

सग्यगज्ञानी होय बहुरि, दिढ़ चारित लीजै ।
एकदेश अरु सकलदेश, तसु भेद कहीजै ॥
त्रस हिंसा को त्याग वृथा, थावर न सँहारै ।
पर बधकार कठोर निंघ, नहिं वयन उचारै ॥10॥

सम्यक्चारित्र का समय और भेद

- सम्यक्ज्ञानी होकर फिर दृढ सम्यक्चारित्र धारण करना चाहिये
- उसके एकदेश और सर्वदेश भेद कहे गये हैं।

सम्यक्चारित्र के भेद

एकदेश

पाँच पापों का आंशिक त्याग

अणुव्रत (अल्प व्रत)

व्रती श्रावक स्वामी

सर्वदेश

पाँच पापों का पूर्ण त्याग

महाव्रत (पूर्ण व्रत)

मुनिराज स्वामी

व्रत क्या ?

निश्चय

कषाय के अभाव रूप
वीतरागता

शुद्ध भाव

व्यवहार

प्रतिज्ञा पूर्वक पाँच
पापों का त्याग

शुभ भाव

गृहस्थ के व्रत के प्रकार

5 अणुव्रत

मूल व्रत

7 शील व्रत

उत्तर व्रत

मूल व्रतों की रक्षा के लिये

गुणव्रत

शिक्षाव्रत

12 प्रकार के व्रत

अणुव्रत

पंच पापों का
एकदेश त्याग

5

गुणव्रत

अणुव्रतों का
उपकार/ वृद्धि करें

3

शिक्षाव्रत

मनिव्रत पालन
की शिक्षा मिले

4

अणुव्रत

- अहिंसाणुव्रत
- सत्याणुव्रत
- अचौर्याणुव्रत
- ब्रह्मचर्याणुव्रत
- परिग्रह-
परिमाणाणुव्रत

गुणव्रत

- दिग्व्रत
- देशव्रत
- अनर्थदण्डव्रत

शिक्षाव्रत

- सामायिक
- प्रोषधोपवास
- भोगोपभोग
परिमाण
- अतिथि
संविभाग

अहिंसाणुव्रत किसे कहते हैं

- व्रत हिंसा का त्याग व
- स्थावर की भी व्यर्थ हिंसा न करना

सत्याणुव्रत किसे कहते हैं

□ दूसरों को दुःखदायक

□ कठोर

□ निंदनीय वचन न बोलना

छंद 11

जल मृत्तिका विन और, नाहि कछु गहै अदत्त ।
निज वनिता विन सकल नारि, सो रहै विरत्ता॥
अपनी 'शक्ति विचार, परिग्रह थोरो राखै ।
दश दिशि गमन प्रमाण ठान, तसु सीम न नाखै ॥11॥

अचौर्याणुव्रत किसे कहते हैं

□ कूप, नदी आदि के जल एवं मिट्टी के अलावा शेष वस्तुओं के बिना पूछे ग्रहण नहीं करना

बह्मचर्याणुव्रत किसे कहते हैं

□स्वस्त्री के अलावा शेष समस्त पर स्त्री से
विरक्त रहना

परिग्रह-परिमाणुव्रत किसे कहते हैं

- अपनी शक्ति का विचार कर बहिरंग परिग्रह का परिमाण रखना
- अंतरंग मिथ्यात्व का पूर्ण त्याग व शेष कषायों का एकदेश त्याग

गुणव्रत

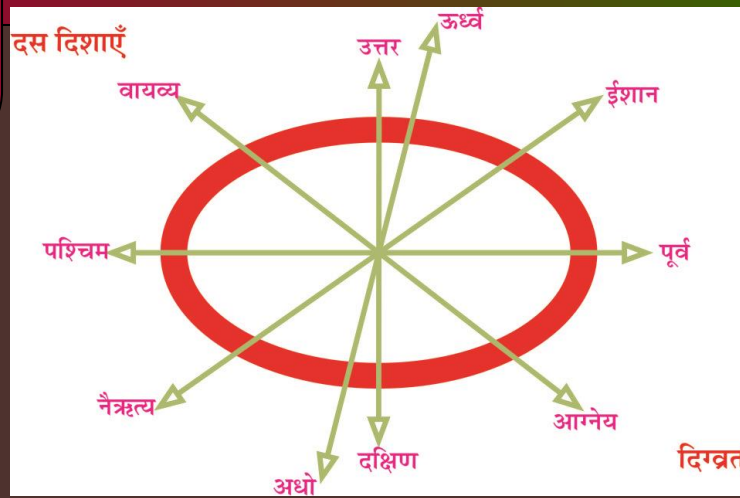
जो अणुव्रतों को गुणाकार रूप से बढ़ाते हैं

दिग्व्रत

देशव्रत

अनर्थदण्ड
त्यागव्रत

दिग्व्रत किसे कहते हैं?



□ पूर्वादि 10 दिशाओं में

□ प्रसिद्ध चिन्हों के द्वारा

□ जीवन पर्यंत जाने - आने की मर्यादा करना

□ और उस सीमा का उल्लंघन न करना

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

दिग्व्रत से क्या लाभ हैं?

- मर्यादा के बाहर सर्व पाप का त्याग होने से
- अणुव्रती उस क्षेत्र में महाव्रत अवस्था को प्राप्त होते हैं

छंद 12

ताहू में फिर ग्राम गली, गृह बाग बजारा ।
गमनागमन प्रमाण ठान, अन सकल निवारा ॥
काहू की धनहानि किसी, जय हार न चिन्तै ।
देय न सो उपदेश होय, अघ बनज कृषी तैं ॥12॥

देशव्रत किसे कहते हैं?

□ काल की मर्यादा करके

□ दिग्व्रत में की गई विशाल सीमा को

□ गाँव, गली, मकान, उद्यान, बजार आदि तक
जाने - आने का माप रखकर अन्य सबका

त्याग करना

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

देशव्रती महाव्रती के समान हो जाते हैं

- निश्चित काल के लिये
- सीमा के बाहर के क्षेत्र में
- स्थूल और सूक्ष्म सर्व पापों का त्याग होने से

अनर्थदण्ड किसे कहते हैं?

□ बिना प्रयोजन मन, वचन, काय की अशुभ
प्रवृत्ति (चेष्टा)

अनर्थदण्डत्याग व्रत किसे कहते हैं?

□ अनर्थदण्ड का त्याग

□ अप्रयोजनभूत स्थावर हिंसा का भी त्याग

□ जैसे – बिना प्रयोजन जमीन खोदना, पानी ढोलना,
अग्नि जलाना, वनस्पति छेदना आदि

अनर्थदण्ड के प्रकार

अपध्यान

पापोपदेश

प्रमादचर्या

हिंसादान

दुःश्रुति

अपध्यान किसे कहते हैं?

- मन से खोटा विचार
- जैसे- दूसरे की हार-जीत का
 - धन हानि का
- पड़ोसी के बुरा करने का

पापोपदेश किसे कहते हैं?

- वचनों द्वारा पाप करने का कहना
- जैसे- पाप उत्पन्न करने वाले व्यापार, खेती का उपदेश देना

छंद 13

कर प्रमाद जल भूमि, वृक्ष पावक न विराधै ।
असि धनु हल हिंसोपकरण, नहिं दे यश लाधै ॥
राग द्वेष करतार कथा, कबहूँ न सुनीजै ।
और हु अनरथ दंड हेतु, अघ तिन्हें न कीजै॥13॥

प्रमादचर्या किसे कहते हैं?

□ काय से बिना प्रयोजन की प्रवृत्ति

□ जैसे - पानी ढोलना

□ जमीन खोदना

□ वृक्ष काटना

□ आग लगाना

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

हिंसादान किसे कहते हैं?

- हिंसा के कारणभूत हथियार, उपहार आदि दूसरे को देना
- जैसे - चाकू का सेट

दुःश्रुति किसे कहते हैं?

- खोटा सुनना
- राग-द्वेष उत्पन्न करने वाली कथा
- जैसे - शृंगारादि की कथा, T.V., Movies

□ तथा अन्य भी पाप के कारण अनर्थदण्ड हैं
उन्हें भी नहीं करना चाहिए

छंद 14

धर उर समता भाव, सदा सामायिक करिये ।
परव चतुष्टय माहिं पाप, तज प्रोषध धरिये ॥
भोग और उपभोग नियम, करि ममत निवारै।
मुनि को भोजन देय फेर, निज करहि अहारै ॥14॥

शिक्षाव्रत

गृहस्थपने से मुनिपने की शिक्षा का
अभ्यास कराते हैं

सामायिक

भोगोपभोग
परिमाण

प्रोषधोपवास

अतिथि
संविभाग

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

सामायिक

□मन में राग-द्वेष के त्याग पूर्वक हमेशा
सामायिक करना

□द्रव्य सामायिक :-

□कुछ काल के लिये समस्त पापों का त्याग कर

□सम्पूर्ण द्रव्यों में राग - द्वेष के त्याग पूर्वक आत्म
भावना की प्राप्ति करना

□व्रती श्रावक कम से कम अंतमुहूर्त काल

□एकांत में

□प्रातः और शाम सामायिक करते हैं

प्रोषधोपवास

□ पर्व (अष्टमी व चतुर्दशी) के दिन पाप कार्यों
को छोड़कर -

□ प्रोषध, या

□ उपवास, या

□ प्रोषधोपवास करना

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

प्रोषध = एक भुक्ति / एकासन

उपवास = 4 प्रकार के आहार का त्याग

प्रोषधोपवास = पर्व के एक दिन पहले व
बाद में प्रोषध व पर्व के दिन उपवास

भोगोपभोग परिमाण

- एक बार भोगा जा सके ऐसी वस्तुओं का
- बारंबार भोगा जा सके ऐसी वस्तुओं का
- मर्यादा रखकर शेष का मोह छोड़ देना ।
- प्रयोजनवान इन्द्रिय विषयों में आसक्ति

घटाकर सीमा बांधना

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

अतिथि संविभाग

□ वीतरागी मुनिराज को अहार देकर फिर स्वयं भोजन करें

□ अ = नहीं

□ तिथि = तारीख

□ सं = समान

□ विभाग = विभाग

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर



चारित्र के भेद



एक देश

सकल देश

अणुव्रत

गुणव्रत

शिक्षाव्रत

→ अहिंसा

→ सत्य

→ अचौर्य

→ ब्रह्मचर्य

→ अपरिग्रह

→ दिग्व्रत

→ देशव्रत

→ अनर्थदण्ड त्याग

सामायिक ←

प्रोषधोपवास ←

भोगोपभोग परिमाण ←

अतिथि संविभाग ←

अपध्यान

पापोपदेश

प्रमादचर्या

हिंसादान

दुःश्रुति

छंद 15

बारह व्रत के अतीचार, पन पन न लगावे।
मरण समय संयास धारि, तसु दोष नशावै ॥
यों श्रावक व्रत पाल, स्वर्ग सोलह उपजावै ।
तहँ तें चय नर जन्म पाय मुनि ह्वै शिव जावै ॥15॥

12 व्रत के अतिचार

□ जो जीव 12 व्रतों के पाँच अतिचारों को नहीं लगाता

□ अतिचार = व्रत का एकदेश भंग होना

सल्लेखना मरण

□ मृत्यु काल में समाधि धारण करके उनके
दोषों को दूर करता है

ब्रती की गति

□ वह इस प्रकार श्रावक के व्रत पालन करके सोलहवें स्वर्ग तक उत्पन्न होता है

□ वहाँ आयु पूर्ण कर मरण के पश्चात मनुष्य होता है

□ फिर मुनि होकर मोक्ष जाते हैं ।